राजर्षि उदय प्रताप सिंह का जीवन परिचय

भिनगा, उत्तरप्रदेश के बहराइच जिले में बिसेन राजपूतों की एक रियासत थी। भिनगा का बिसेन परिवार गोंडा के बिसेनों की ही एक शाखा है। राजर्षि गोंडा के राजा राम सिंह के छोटे पुत्र भवानी सिंह के वंशज हैं। भिनगा पर जनवार शासक का शासन था। परन्तु उनकी मृत्यु के बाद, उनके सम्बन्धियों को अधिकार नहीं दिया गया और भिनगा बिसेन शासित रियासत बन गयी जिसके शासक भवानी सिंह जी हुये। इनकी छठवीं पीढ़ी में राजर्षि उदय प्रताप सिंह जी हुये। इनके पिता राजा किशनदत्त सिंह थे। राजर्षि का जन्म 3 सितम्बर 1850 ई. में हुआ था तथा ये 1869 ई. में भिनगा रियासत के राजा बने। इनका विवाह मिर्जापुर जिले की अघोरीबरहर रियासत के चौहान राजा रघुनाथ शाह देवा की छोटी पुत्री के साथ हुआ था। इनके 18 दिसम्बर 1878 ई. को एक पुत्र पैदा हुआ जिनका नाम कुंवर महेंद्र विक्रम सिंह था।

राजा उदय प्रताप सिंह ने लखनऊ के वार्डस इंस्टिट्यूशन से शिक्षा प्राप्त की। वे एक सामाजिक एवं राजनैतिक विचारक थे तथा विविध सामाजिक और राजनैतिक विषयों पर अपने विचार तत्कालीन ब्रिटिश अखबार "नाइनटीन्थ सेन्चुरी" में व्यक्त करते रहते थे और उसमें उनके अनेक लेख भी छपते रहते थे। उन्होंने बहुत सी पुस्तकें और लेख भी लिखे थे। अंग्रेजी भाषा पर उनका पूरा अधिकार था।

राजर्षि तत्कालीन सरकार में बहुत सारे सम्माननीय पदों पर भी आसीन रहे। वे शिक्षा आयोग के सलाहकार रहे तथा उनको 1886 में यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन का सदस्य बनाया गया। उन्हें उनके कार्यों के परिणामस्वरूप इलाहाबाद और कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। वे वायसराय लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य भी थे तथा लखनऊ म्युनिसिपल बोर्ड के सभापति थे। भारत सरकार ने उन्हें 1887 में तोप प्रदान की थी। राजर्षि को आर्म एक्ट से मुक्त करते हुए न्यायालयों में व्यक्तिगत उपस्थिति देने से भी छूट प्रदान की गयी थी। राजर्षि अवध सूबे के सबसे बड़े रियासत के राजा थे तथा काफी प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे।

अँग्रेजी हुकूमत के समय देश गुलामी की जंजीर में जकड़ा हुआ था। राजपूतों की भी आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक स्थिति बहुत खराब थी। राजा साहब उदय प्रताप सिंह जी ने क्षेत्र के राजपूतों के उत्थान के लिए "क्षत्रिय उपकारिणी महासभा" का निर्माण किया और उसके खर्चे के लिए भिनगा राज ने 35000 रूपये प्रदान किये। राजर्षि ने क्षत्रिय युवाओं की शिक्षा के लिए भिनगा राज क्षत्रिय स्कॉलरशिप एवं एडवार्डस्कॉलरशिप का भी प्राविधान किया। उन्होंने क्षत्रिय छात्रों को ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट करने के लिए 11000 रूपये की सहायता प्रदान की जिससे समाज के छात्रों को विदेश से अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल सके। क्षत्रिय सभा द्वारा राजा उदयप्रताप सिंह जी जूदेव को 'राजर्षि' उपाधि दी गयी जिसे 1895 ई. में तत्कालीन भारत सरकार द्वारा भी उनके संबोधन हेतु मान्यता प्रदान की गई।

कालाकांकर प्रतापगढ़ के राजा हनुमंत सिंह के नेतृत्व में गंगा–जमुना क्रांति के प्रवाह में ''राम दल'' नाम के संघ ने गोपनीय तरीके से क्लब के रूप में क्षत्रिय महासभा के सूत्रपात्र को जन्म दिया और क्षत्रियों ने ''राम दल'' को विघटित कर उसके स्थान पर 1860 ई. में ''क्षत्रिय हितकारणी सभा" का गठन किया पर यह राजाओं, राजदरवारियों और उनके सहयोगियों का संगठन आम बन कर रह गया जिसका कार्य क्षेत्र उत्तर प्रदेश (प्रतापगढ़, गोरखपुर, आजमगढ़, बलिया, रायबरेली, उन्नाव, आगरा, मथुरा, हरदोई, मैनपुरी व गोंडा), मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, बंगाल, जम्मू व कश्मीर एवं पंजाब (वर्तमान हरियाणा) तक ही सीमित था। कालाकांकर में जन्मी क्षत्रिय हितकारणी सभा ने कालान्तर में आगरा और अवध के नाम को परिवर्तित कर संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध के नाम से पंजीकृत किया।

राजर्षि को क्षत्रियों के सामाजिक एवं शैक्षणिक उत्थान के प्रति प्रोत्साहित करने में बनारस के बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह के योगदान को भी नजरन्दाज नहीं किया जा सकता है। उन्हीं के निरंतर आग्रह और प्रयास से भिनगा नरेश मार्च 1913 के क्षत्रिय महासभा के 7वें अधिवेशन में अजमेर पधारे। ये अधिवेशन बीकानेर नरेश महाराजा बहादुर सर गंगा सिंह जी के सभापतित्व में अजमेर में हुआ था। राजर्षि अजमेर में महासभा के शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्यों तथा बाबू साहब के शिक्षा सम्बन्धी योजनाओं से अत्यधिक प्रभावित हुये तथा उन्होंने हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया। तभी राजर्षि ने अपने व्यय से काशी में महासभा का अधिवेशन कराने का निश्चय भी किया। दिसम्बर 1905 में क्षत्रिय महासभा का 9वां अधिवेशन काशी में कौशल किशोर मल्ल, मझौली नरेश के सभापतित्व तथा बाबू प्रसिद्ध नारायण के कुशल प्रबंधन से बड़ी शान से सम्पन्न हुआ। इसी अधिवेशन से राजर्षि और बाबू साहब की निकटता घनिष्ठता में बदली और भिनगा नरेश राजर्षि उनको समाज सेवा के क्षेत्र में अपना सलाहकार मानने लगे। पंडित मदन मोहन मालवीय जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए सभी राजपरिवारों से सहयोग राशि की याचना कर रहे थे तो उनकी निगाह भिनगा नरेश राजर्षि के संसाधनों पर भी थी। इसी निमित्त मालवीय जी ने एक बैठक कमच्छा में आयोजित की जिसमें काशी के गणमान्य नागरिक, बुद्धिजीवी और शिक्षाविदों को आमंत्रित किया गया। इस बैठक में राजर्षि उदय प्रताप जी को भी विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था । जब बाबू प्रसिद्ध नारायण जी को इस योजना की जानकारी हुई तो उन्होंने योजनावद्ध तरीके से राजर्षि को बैठक में जाने से रोका और उनका प्रतिनिधित्व स्वयं किया। बैठक के दौरान मालवीय जी ने प्रसिद्ध नारायण जी को सम्बोधित करते हुए कहा, "बाबू साहब आप राजा साहब राजर्षि को समझाओ कि जब बनारस में काशी विश्वविद्यालय खुल ही रहा है तो अलग से राजपूत कॉलेज खोलने का कोई औचित्य नहीं है। वे उसी में अपना महान योगदान दें"। जबाब में मालवीय जी से राजर्षि पर दबाव न डालने का आग्रह करते हुए बाबू साहब ने कहा आप का उद्देश्य गंगा को स्वच्छ करना है, मैं नाले को स्वच्छ करना चाहता हूँ। यदि मैं अपने उद्देश्य में असफल रहा तो आप की गंगा भी स्वच्छ नहीं हो पाएगी" और बैठक से विदा हो लिए। दूसरे दिन ठा. काली प्रसाद सिंह जी ने इस घटना से राजर्षि को अवगत कराया। राजर्षि ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि "प्रसिद्धि बाबू ने अच्छा किया वरना वे अन्त तक घेरते"।

राजर्षि के पुत्र महेंद्र विक्रम सिंह जी का चेचक से निधन हो गया। पहले से ही वैराग्य मय जीवन व्यतीत कर रहे राजर्षि महा निराशा में डूब गये। जब यह सूचना और राजर्षि की स्थिति की जानकारी बाबू प्रसिद्ध नारायन सिंह को हुई तो उन्होंने बाबू चन्द्रिका प्रसाद सिंह जी (शिवपुर दीयर, बलिया) और ठा. काली प्रसाद सिंह के साथ शोक संवेदना व्यक्त करने पहुंचे। बाबू साहब ने ही पहल करते हुए कहा महाराज पुत्र–वियोग जैसा दुःख इस धरा पर दूसरा कोई नहीं। कितना ही बड़ा सार्थक प्रयास क्यों न हो उस स्थान की पूर्ति सम्भव नहीं। फिर भी ज्यादा शोकाकुल होना आप जैसे महापुरुष की गरिमा के अनुकूल नहीं। आप तो वह कार्य करने में सक्षम हैं जिससे एक क्या हजारों पुत्र पैदा हो सकते हैं, जो देश और जाति की सेवा कर सदियों तक आपके नाम को अमर कर सकते हैं। राजर्षि में जैसे चेतना लौट आयी, उनमें सोया हुआ महापुरुष जाग उठा, उन्होंने महारानी साहिबा को बुला कर बाबू प्रसिद्ध नारायण के शब्दों को अक्षरशः दोहराया, "अब मैं वही कार्य करूँगा मेरे एक नहीं हजारों पुत्र पैदा हों जो देश और क्षत्रिय जाति की सेवा करें"।

सन् 1908 में राजर्षि ने साढे दस लाख रूपये का अमरदान देकर काशी में एक विद्यालय खोलने का संकल्प लिया। स्थान के चयन और विद्यालय के स्थापना की जिम्मेदारी बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह ने सम्हाली। राजर्षि की इच्छा थी कि विद्यालय शहर से दूर हो। तदनुसार वरूणा पार काशी के पश्चिमोत्तर सीमा पर कुर्ग स्टेट (कर्नाटक) की 50 एकड़ के भू–खण्ड का चुनाव किया गया। इसके लिए राजर्षि ने संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जान हिवेट को पत्र लिखा। बाबू साहब ने भी जान हिवेट से अपनी मित्रता का उपयोग किया और उस भू–खण्ड को सांकेतिक मूल्य पर 'क्षत्रिया खैरात सोसाइटी' के पक्ष में अधिग्रहित कराया। बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह की देख–रेख में 25 नवम्बर 1909 को तत्कालीन गवर्नर सर जान हिवेट ने विद्यालय का शिलान्यास किया। बाबू साहब ने नींव पूजन का संकल्प लिया। सात नदियों के जल से भूमि का शोधन किया गया। गवर्नर के नाम पर विद्यालय का नाम 'हिवेट क्षत्रिय हाई स्कूल' पड़ा। बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह जी को प्रबंध समिति का अध्यक्ष बनाया गया।

राजर्षि ने एक अनाथाश्रम, भिनगाराज अनाथालय कमच्छा बनारस में स्थापित किया और 1 लाख 23 हजार रूपये प्रदान कर स्थायी कोष बनाया जिससे उसमें होने वाले लगातार खर्चों को पूरा किया जा सके। राजर्षि ने लाखों रूपये विभिन्न सामाजिक संगठनों को प्रदान किये जिनमें के.जी. मेडिकल कॉलेज, लखनऊ, मुलधान कुटी विहार, सारनाथ, कैल्विन ताल्लुकेदार कॉलेज, लखनऊ, हिंदी प्रचारिणी सभा आदि। उन्होंने ब्याज के रूप में होने वाली आय से विद्यार्थियों को स्थाई स्कॉलरशिप प्रदान करने की भी व्यवस्था की। राजर्षि के विचारों का साम्य सर सैयद अहमद खान और भारत रत्न महामना पंडित मदनमोहन मालवीय जी से रहा इसलिए उनका मुख्य बिंदु शैक्षणिक व्यवस्था पर रहा।

महान सामाजिक उत्थान एवं शैक्षणिक विकास के ये अमर पुरोधा 15 जुलाई 1913 ई. को दुनिया को अलविदा करके चल बसे। राजर्षि के दिवंगत होने के बाद जब 1921 में इंटरमीडिएट और हाई स्कूल एक्ट बना और इस हिवेट विद्यालय में भी इण्टर की कक्षाएँ खुलीं तब बाबू प्रसिद्ध नारायण सिंह जी के ही प्रस्ताव और सद्प्रयास से हिवेट क्षत्रिया हाई स्कूल के साथ राजर्षि का नाम जोड़ा गया। इस प्रकार वर्तमान में उदय प्रताप स्वायत्तशासी महाविद्यालय राजर्षि राजा उदय प्रताप सिंह जूदेव के तन–मन–धन से फल–फूल रहा है और आज देश की प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थाओं में विख्यात है।

– धीरेन्द्र सिंह जादौन
मिडिया सलाहकार,नार्थ इंडिया अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा
सवाईमाधोपुर, राजस्थान

बदलते परिप्रेक्ष्य में खाद्यान्न उत्पादन की चुनौतियाँ

खाद्यान्न उत्पादन की अनेक चुनौतियाँ हैं, जिनमें जलवायु परिवर्तन सबसे बड़ी चुनौती है। जलवायु परिवर्तन अब एक वास्तविकता है, इसीलिए सम्पूर्ण विश्व में इसकी चर्चा हो रही है और इससे होने वाले नकारात्मक परिणामों से निजात पाने के उपाय तलाशे जा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम में आ रही अनिश्चितता सबसे बड़ी चिन्ता का विषय है, क्योंकि इससे खेती–बारी पर पड़ने वाला प्रभाव सीधे–सीधे हमारे जीवकोपार्जन से जुड़ा है। मौसम की अनिश्चितता के कारण कभी बाढ़, कभी सूखा, तो वहीं कभी तापमान का अचानक बढ़ या घट जाना आदि जैसी बातें आज आम हो गयी हैं। साथ ही नये–नये कीट व बीमारियों का उद्भव, खरपतवार की बहुलता, दिन–प्रतिदिन भू–जल का गिरता स्तर, रसायनों के अविवेकपूर्ण प्रयोग से बढ़ता प्रदूषण और अस्वस्थ होती जमीनें, आदि ऐसे अनेक लक्षण हैं, जो अब बहुधा देखे जा रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में खाद्यान्न उत्पादन का सतत् एवं स्थाई विकास आज की सबसे बड़ी चुनौती बन गयी है।

दूसरी बड़ी समस्या प्राकृतिक संसाधनों के निरन्तर ह्रास होने के कारण उत्पन्न हो रही है। एक तरफ जहाँ जल की कमी हो रही है, वहीं ऊर्जा की उपलब्धता भी कोई छोटी समस्या नहीं है। खाद व पौध–सुरक्षा हेतु उपयोग होने वाले रसायनों पर भी सवाल उठने लगे हैं, क्योंकि वे उत्पादन बढ़ाने में मदद तो अवश्य करते हैं, पर उनके प्रयोग के कारण मिट्टी, जल और वायु में प्रदूषण बेतहासा फैल रहा है। इसलिए उनके उपयोग के खिलाफ आवाजें उठने लगी हैं। खेती के लिए उपयुक्त जमीनों पर रिहायसी मकान व कारखानें बन रहे हैं। परिणामस्वरूप खेती के लिए जमीनें कम होती जा रही हैं। इसी तरह खेती के लिए मजदूरों की कमी भी किसानों की एक बड़ी समस्या मानी जाने लगी है, जो मनरेगा परियोजना के कारण और भी विकट हो गयी है। आज खेती के लिए आवश्यक संसाधनों की बेहद कमी हो रही है और उनके दिनों दिन कमतर होते रहने की सम्भावना भी अधिक है। स्पष्टतः आज की दूसरी चुनौती यह है कि कम–से–कम संसाधनों के बल पर अधिक–से–अधिक खाद्यान्न का उत्पादन कैसे सुनिश्चित किया जाए?

तीसरी बड़ी समस्या देश में साल–दर–साल तेजी से बढ़ती जनसंख्या की है जिसके कारण खाद्यान्न की माँग भी तेजी से बढ़ रही है। तो क्या हम आने वाले दिनों में इस अनवरत् बढ़ती जनसंख्या की खाद्यान्न की माँग की पूर्ति कर सकेंगे? आज यह एक अहम प्रश्न बन गया है।